Hindi Honours.

चाणक्य – "उत्पीड़न की चिनगारी को अत्याचारी अपने ही अंचल में छिपाये रहता है"

चाणक्य – "ईश्वर सब मनुष्यों को स्वतंत्र उत्पन्न किया है, परन्तु व्यक्तिगत स्वतंत्रता वहीं तक दी जा सकती है, जहाँ दूसरो की स्वतंत्रता में बाधा न पड़े। यही राष्ट्रीय नियमों का मूल है। वत्स चन्द्रगुप्त। स्वेच्छाचारी शासन का परिणाम तुमने स्वयं देख लिया है, अब मंत्री-परिषद् की सम्मति से मगध और आर्य्यावर्त के कल्याण में लगो।"

चाणक्य – "महत्वाकांक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी में रहता है"।

राक्षस – "मेरे देश में कृतज्ञता पुरुषत्व का चिह्न है"।

कार्नेलिया – "कृतज्ञता पाश है, मनुष्य की दुर्बलताओं के फन्दे उसे और भी दृढ़ करते हैं"।

कार्नेलिया – "महत्वाकांक्षा के दाँव पर मनुष्यता सदैव हारी है"।

कल्याणकुमार

Scanned with CamScanner

युवासिनी – "धनियों के प्रमोद का कटा-छटा हुआ शोभा-वृक्ष कोई डाली उल्लास से आगे बढ़ी, कुतर दी गई। माली के मन से सँवरे हुए गोल-मटोल खड़े रहो।"

युवासिनी – "अकस्मात् जीवन कानन में, एक राका रजनी की छाया में छिपकर मधुर वसन्त घुस आता है। शरीर की सब क्यारियाँ हरी भरी हो जाती हैं, सौन्दर्य का कोकिल – कौन? कहकर सबको रोकने-टोकने लगता है, पुकारने लगता है। राजकुमारी! फिर उसी में प्रेम का मुकुल लग जाता है, आँसू भरी स्मृतियाँ मकरन्द-सी उस में छिपी रहती हैं।"

युवासिनी – "प्रेम में स्मृति का ही सुख है। एक टीस उठती है, वही तो प्रेम का प्राण है। आश्चर्य तो यह है कि प्रत्येक कुमारी के हृदय में वह निवास करती है। परन्तु उसे सब प्रत्यक्ष नहीं कर सकती, सबको उसका मार्मिक अनुभव नहीं होता"

Scanned with CamScanner